NEERAJ®

New Syllabus

N-506

lekos'kh lanHkZ esa cPPkksa dks le>uk

(Understanding Children in Inclusive Context)

Reference Book Based on the Syllabus of

N.I.O.S.

D.El.Ed.

By : Prieti Gupta

Published by:

NP

NEERAJ PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)

Sales Office:
1507, First Floor, Nai Sarak, Delhi - 6
Ph: 011-23260329, 45704411, 23244362, 23285501
E-mail: info@neerajbooks.com
Website: www.neerajbooks.com

(An ISO 9001 : 2008 Certified Company)

Price: ₹ 120.00

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

Admn. Office : **Delhi-110 007**
Sales Office : **1507, 1st Floor, Nai Sarak, Delhi-110 006**
E-mail: **info@neerajbooks.com** *Website*: **www.neerajbooks.com**

	Typesetting by: ***Competent Computers***	*Printed at*: ***Novelty Printer***

Notes:

1. *For the best & upto-date study & results, please prefer the recommended textbooks/study material only.*
2. *This book is just a Guide Book/Reference Book published by NEERAJ PUBLICATIONS based on the suggested syllabus by a particular Board /University.*
3. *The information and data etc. given in this Book are from the best of the data arranged by the Author, but for the complete and upto-date information and data etc. see the Govt. of India Publications/textbooks recommended by the Board/University.*
4. *Publisher is not responsible for any omission or error though every care has been taken while preparing, printing, composing and proof reading of the Book. As all the Composing, Printing, Publishing and Proof Reading etc. are done by Human only and chances of Human Error could not be denied. If any reader is not satisfied, then he is requested not to buy this book.*
5. *In case of any dispute whatsoever the maximum anybody can claim against NEERAJ PUBLICATIONS is just for the price of the Book.*
6. *If anyone finds any mistake or error in this Book, he is requested to inform the Publisher, so that the same could be rectified and he would be provided the rectified Book free of cost.*
7. *The number of questions in NEERAJ study materials are indicative of general scope and design of the question paper.*
8. *Any type of ONLINE Sale/Resale of "NEERAJ BOOKS" published by "NEERAJ PUBLICATIONS" on Websites, Web Portals, Online Shopping Sites, like Amazon, Flipkart, Ebay, Snapdeal, etc. is strictly not permitted without prior written permission from NEERAJ PUBLICATIONS. Any such online sale activity by an Individual, Company, Dealer, Bookseller, Book Trader or Distributor will be termed as ILLEGAL SALE of NEERAJ BOOKS and will invite legal action against the offenders.*
9. *Subject to Delhi Jurisdiction only.*

© Reserved with the Publishers only.

Spl. Note: *This book or part thereof cannot be translated or reproduced in any form (except for review or criticism) without the written permission of the publishers.*

How to get Books by Post (V.P.P.)?

If you want to Buy NEERAJ BOOKS by Post (V.P.P.), then please order your complete requirement at our Website ***www.neerajbooks.com****. You may also avail the 'Special Discount Offers' prevailing at that Particular Time (Time of Your Order).*
To have a look at the Details of the Course, Name of the Books, Printed Price & the Cover Pages (Titles) of our NEERAJ BOOKS You may Visit/Surf our website ***www.neerajbooks.com.***
No Need To Pay In Advance, the Books Shall be Sent to you Through V.P.P. Post Parcel. All The Payment including the Price of the Books & the Postal Charges etc. are to be Paid to the Postman or to your Post Office at the time when You take the Delivery of the Books & they shall Pass the Value of the Goods to us by Charging some extra M.O. Charges.
We usually dispatch the books nearly within 4-5 days after we receive your order and it takes Nearly 5 days in the postal service to reach your Destination (In total it take atleast 10 days).

NEERAJ PUBLICATIONS

(Publishers of Educational Books)
(An ISO 9001 : 2008 Certified Company)
1507, 1st Floor, NAI SARAK, DELHI - 110 006
Ph. 011-23260329, 45704411, 23244362, 23285501
E-mail: **info@neerajbooks.com** *Website:* **www.neerajbooks.com**

विषय–सूची

समावेशी संदर्भ में बच्चों को समझना

(Understanding Children in Inclusive Context)

Sample QUESTION PAPER - 1	1–4
Sample QUESTION PAPER - 2	1–4

क्रमांक	विवरण	पृष्ठ

बच्चों की वृद्धि विकास एंव विकास को समझना
(Child Growth and Development : Basics)

1.	बच्चों को समझना **(Understanding the Child)**	1
2.	आनुवांशिकता एवं पर्यावरण की भूमिका **(Heredity and Environment)**	10

बच्चों का व्यक्तित्व विकास
(Personality Development of Children)

3.	व्यक्तित्त्व का विकास और इसका मूल्यांकन **(Development of Personality and its Assessment)**	20
4.	चिंतन कौशल का विकास **(Development Thinking Skills)**	30
5.	स्वयं का विकास **(Development of Self)**	42

क्रमांक	विवरण	पृष्ठ
6.	बच्चों में रचनात्मक विकास **(Developing Creativity in Children)**	52
7.	समावेशी शिक्षा का परिचय **(Concept of Inclusive Education)**	57
	समावेशी शिक्षा **(Inclusive Education)**	
8.	विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की अवधारणा **(Concept of Children with Special Needs)**	64
9.	विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की शिक्षा **(Education of Children with Special Needs)**	70
10.	अंगीकरण प्रवीणता का विकास **(DAS)** सहायक साधन **(AD)**, विशेष उपचार **(ST)** **(Development of Adoptive Skills (DAS),** **Assistive Device (AD), Special Therapies (ST)**	76
	बालिकाओं और बच्चों का अधिकार **(Girl Child and Child Right)**	
11.	शिक्षा में लैंगिक मुद्दे **(Gender Issues in Education)**	79
12.	बालिकाओं को सशक्त बनाना **(Empowering Girl Children)**	84
13.	बालक और पात्रताएँ **(Rights of the Child and Entitlements)**	90

■■

Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

Sample

QUESTION PAPER - 1

(Solved)

Based on: **National Institute of Open Schooling (D.El.Ed.)**

समावेशी संदर्भ में बच्चों को समझना
(Understanding Children in Inclusive Context)

समय : 3 घंटे] *[पूर्णांक : 70*

सामान्य निर्देश: *सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।*

प्रश्न 1. निम्नलिखित में से कौन सा उपागम समावेशी शिक्षा के अंतर्गत आता है?

(क) सीखने के लिए ऐसा वातावरण जहाँ विद्यार्थियों की व्यक्तिगत आवश्यकताएँ पूरी होती हैं।

(ख) सीखने के लिए ऐसा वातावरण जहाँ शिक्षक तथा विद्यार्थियों में अंतर हो।

(ग) सीखने के लिए ऐसा वातावरण जहाँ विद्यार्थियों को सफल होने के लिए कम अवसर प्राप्त हों।

(घ) सीखने के लिए ऐसा वातावरण जहाँ चुनौतियों तथा विभिन्नता के लाभों के प्रति उदासीनता हो।

उत्तर–(क) सीखने के लिए ऐसा वातावरण जहाँ विद्यार्थियों की व्यक्तिगत आवश्यकताएँ पूरी होती हैं।

प्रश्न 2. विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चों के लिए शिक्षा का विकास सर्वप्रथम किस देश में हुआ?

(क) भारत

(ख) अमेरिका

(ग) यूरोप

(घ) चीन

उत्तर–(ग) यूरोप

प्रश्न 3. पियाजे मुख्य रूप से किस प्रकार के अध्ययन के लिए प्रसिद्ध है?

(क) भाषा विकास

(ख) संज्ञानात्मक विकास

(ग) सामाजिक विकास

(घ) यौन विकास

उत्तर–(ख) संज्ञानात्मक विकास

प्रश्न 4. ***शिक्षणअधिगमप्रक्रियामेंकौनसामहत्त्वपूर्ण अध्ययन कक्षा के बाहर संचालित किया जा सकता है?***

(क) बैठने की व्यवस्था

(ख) जैविक विविधता से परिचय करना

(ग) इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का प्रयोग

(घ) पाठ्य सामग्री का नियोजन

उत्तर–*(ख) जैविकविविधतासेपरिचयकरना*

प्रश्न 5. दुर्घटना के कारण यदि बच्चे की वाणी प्रभावित होती है तो निम्नन में से कौन सा कारक जिम्मेदार है?

(क) यदि दिमाग का दायां भाग प्रभावित हो

(ख) यदि दिमाग का बायां भाग प्रभावित हो

(ग) अभ्यास का अभाव

(घ) उपर्युक्त वातावरण का प्रभाव

उत्तर–(क) यदि दिमाग का दायां भाग प्रभावित हो

प्रश्न 6. जब बच्चे को कोई नियम या सिद्धांत सिखाना हो तो सबसे उपर्युक्त विधि होगी।

(क) कहानी-कथन विधि

(ख) विश्लेषण विधि

(ग) आगमन विधि

(घ) निगमन विधि

उत्तर–(ग) आगमन विधि

प्रश्न 7. शिक्षा मनोविज्ञान अध्ययन करना है।

(क) वंशानुक्रम व वातावरण का अध्ययन

(ख) ध्यान वंश रुचि का अध्ययन

(ग) प्रेरणा व पनर्बलन के प्रभाव का अध्ययन

(घ) वैयक्तिक विभिन्नताओं का अध्ययन

उत्तर–(क)वंशानुक्रम व वातावरण का अध्ययन

www.neerajbooks.com

प्रश्न 8. समाज की उन्नति का मूल है।

(क) बालिका शिक्षा को कम महत्त्व मिले

(ख) केवल महिला अध्यापक हो

(ग) बालिका शिक्षा के लिए अलग विद्यालय हो

(घ) बालक और बालिका की शिक्षा दोनों के लिए एक समान हो।

उत्तर–(घ) बालक और बालिका की शिक्षा दोनों के लिए एक समान हो।

प्रश्न 9. बच्चों में व्यक्तिगत शैक्षिक विभिन्नता का प्रमुख कारण है।

(क) आनुवंशिकता

(ख) वातावरण

(ग) आनुवंशिकता व वातावरण

(घ) वुद्धि का अन्तर

उत्तर–(ग)आनुवंशिकता व वातावरण

प्रश्न 10. प्रतिभाशाली बालक की क्या विशेषता होती है?

(क) सेवाभाव की प्रकृति

(ख) मानसिक बुद्धि की तीव्रता

(ग) अध्ययन में अरूचि

(घ) पर्यटन में रुचि

उत्तर–(ख)मानसिक बुद्धि की तीव्रता

प्रश्न 11. सर्वप्रथम खुला विश्व विद्यालय की स्थापना कब की गई थी?

(क) 1970-इंग्लैंड में

(ख) 1972-भारत में

(ग) 1969-रूस में

(घ) 1969-अमेरिका में

उत्तर–(क) 1970-इंग्लैंड में

प्रश्न 12. नारी शिक्षा के क्षेत्र में प्रमुख समस्या क्या है?

(क) सामाजिक मानसिकता

(ख) सहशिक्षा की समस्या

(ग) नारी का नकारात्मक मूल्यांकन

(घ) उपरोक्त सभी

उत्तर–(घ) उपरोक्त सभी

प्रश्न 13. राष्ट्रीय स्तर पर स्वास्थ्य बाधित बालकों की व्यवस्था की जाती है।

(क) राज्य स्तर द्वारा

(ख) केन्द्र स्तर द्वारा

(ग) स्वयं सेवी संस्थाओं द्वारा

(घ) उपरोक्त सभी

उत्तर–(घ) उपरोक्त सभी

प्रश्न 14. सर्वशिक्षा अभियान के अंतर्गत शोध तथा मूल्यांकन संबंधी कारक में कौन-सी गतिविधि सम्मिलित है?

(क) योजना बनाना तथा कार्यान्वित करना

(ख) अध्यापकों का प्रशिक्षण

(ग) संसाधन समूहों का सुदृढ़ीकरण

(घ) बालिकाओं की शिक्षा पर एक राष्ट्रीय समिति का गठन किस वर्ष हुआ था?

उत्तर–(ख) अध्यापकों का प्रशिक्षण

प्रश्न 15. बालिकाओं की शिक्षा पर एक राष्ट्रीय समिति का गठन किस वर्ष हुआ था?

(क) 1958

(ख) 1959

(ग) 1963

(घ) 1964

उत्तर–(क) 1958

प्रश्न 16. समावेशी शिक्षा की व्यवस्था किस प्रकार के बालकों हेतु की जाती है?

उत्तर–समावेशी शिक्षा की व्यवस्था सामान्य, विशेष आवश्यकता वाले व प्रतिभाशाली सभी प्रकार के बालकों हेतु की जाती है।

प्रश्न 17. अधिगम वातावरण का निर्माण किस के लिए करना चाहिए?

उत्तर–जो विद्यालय पिछड़े हुए हैं, उनके लिए अधिगम वातावरण का निर्माण करना चाहिए।

प्रश्न 18. दृष्टिबाधितों की शिक्षा के लिए किस लिए का प्रयोग किया जाता है?

उत्तर–ब्रेल लिपि

प्रश्न 19. विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चों की अवधारणा को स्पष्ट करें।

उत्तर–सभी समाज में इस प्रकार के बच्चे होते हैं जिनकी आवश्यकताएँ औसत बच्चों से भिन्न होती हैं। सामान्य बच्चों की तुलना में उन्हें कुछ अतिरिक्त सहायता की आवश्यकता पड़ती है। उदाहरण के लिए दृष्टिहीन बच्चे सामान्य शिक्षण प्रक्रिया से शिक्षा ग्रहण नहीं कर पाते अत: उन्हें ब्रेल लिपि एवम् सामग्री की विशेष आवश्यकता होती है। इसी तरह श्रवण बाधित बच्चों को श्रवण यंत्र की आवश्यकता होती है। इसके अलावा मानसिक आशक्तताओं, संवेगात्मक विकारों और अधिगम अशक्तताओं वाले बच्चे भी होते हैं।

प्रश्न 20. ओष्ठ पठन तकनीक क्या है?

उत्तर–ओष्ठ पठन द्वारा बालकों को ओठों के हिलने और गति के आधार पर वर्णों और शब्दों को पढ़ने की शिक्षा दी जाती है। यह प्रक्रिया सामान्यतया मूक-बधिर बालकों को प्रशिक्षण देने के लिए प्रयोग की जाती है।

Neeraj Publications www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

Sample Preview of The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

समावेशी संदर्भ में बच्चों को समझना

(Understanding Children in Inclusive Context)

बच्चों की वृद्धि विकास एंव विकास को समझना

(Child Growth and Development : Basics)

बच्चों को समझना
(Understanding the Child)

1

Neeraj Publications www.neerajbooks.com

अध्याय का विहंगावलोकन

बाल-विकास का अध्ययन एक अत्यंत ही रोचक एवं कौतूहल भरा विषय है। इसका मुख्य कारण यह है कि यह अध्ययन बरबस हमें अपने स्वयं की अतीत हो चुकी बाल्यावस्था की याद दिला जाता है, जब चिन्तारहित बालकमन आनन्दविभोर हो खेल-कूद कर अपने जीवन के उन स्वर्णिम पलों को व्यतीत करता है। यह मनुष्य के जीवन का वह समय होता है, जब बालकमन किसी भी प्रकार के राग-द्वेष से कोसों दूर रहता है और जहाँ कहीं उसे प्यार की अनुभूति होती है, वहीं निश्छल एवं निष्कपट भाव से रम जाता है।

विद्वानों के अनुसार बालकमन जन्म के पश्चात इतना लाचार नहीं होता है, वरन उसमें कुछ विशिष्ट क्षमताएं होती हैं जो कालान्तर में परिपक्व होकर स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होती हैं। उपर्युक्त संदर्भ की पुष्टि एक अत्यंत प्राचीन लोकोक्ति भी करती है–''होनहार बिरवान के होत चिकने पात'' अर्थात जिस प्रकार फल देने की असीम सम्भावना वाले पौधों के पत्ते चिकने होते हैं उसी प्रकार होनहार बच्चे जन्म के समय ही विशिष्ट गुणों से लैस होते हैं, जिसकी पहचान जन्म के उपरान्त ही की जा सकती है।

सच्चाई चाहे जो भी हो (बच्चे का मन साफ स्लेट की तरह होता है या नहीं), परन्तु यह निश्चित तौर पर कहा जा सकता है कि बालकमन एवं प्रौढ़ के मन के स्तर में एकरूपता नहीं होती है। दूसरे शब्दों में कहें तो बालकमन अपनी शैशवावस्था से प्रौढ़ मन की प्रौढ़ावस्था प्राप्त करने तक एक निश्चित प्रक्रिया के दौर से गुजरता है।

बचपन और विकास का अर्थ

विकास के दृष्टिकोण से बच्चे अथवा बाल्यावस्था का वर्गीकरण आयु के संदर्भ में किया जाता है। मानव को किशोरावस्था के आरम्भ तक बच्चा समझा जाता है, जो सामान्यतया जन्म से लेकर तकरीबन बारह से तेरह वर्ष की अवस्था तक होती है।

अनुभव और निर्णय क्षमता भी बच्चे और प्रौढ़ में विभेद का आधार होती है। इस दृष्टि से एक चालीस-पचास वर्ष की आयु का व्यक्ति भी बच्चों की श्रेणी में ही होगा यदि उसमें बोध क्षमता, तर्क शक्ति एवं निर्णय क्षमता का अभाव हो। यही कारण है कि कई व्यक्ति इन मानवोचित क्षमताओं के अभाव में दूसरों का विश्वास खो बैठते हैं। ऐसे व्यक्तियों से प्राय: कोई महत्त्वपूर्ण कार्य नहीं करवाया जाता। हालांकि किसी क्रिया को उपयुक्त मानने का मानदण्ड समय तथा स्थान के अनुसार बदलता रहता है।

भारतीय परम्परा के परिप्रेक्ष्य में बचपन के निर्धारण का पैमाना बच्चा और उसके अभिभावक के बीच के सम्बन्ध के आधार पर होता है अर्थात व्यक्ति एवं उसके अभिभावक के बीच की कड़ी होकर उनके बीच रिश्तों की गर्माहट होती है। यही कारण है कि उम्र की एक लम्बी दूरी तय करने के पश्चात भी व्यक्ति अपने माता-पिता एवं उसी श्रेणी के सगे-संबंधियों की दृष्टि में हमेशा

www.neerajbooks.com

बच्चा ही बना रहता है, जिससे बाल्योचित गलतियां होने की सम्भावना हमेशा बनी रहती है। फलस्वरूप बात-बात में सुझाव देना अभिभावकों के लिए एक सामान्य बात हो जाती है।

विकास की संकल्पना

बाल-विकास का अर्थ वस्तुत: समय के साथ-साथ बच्चों के व्यवहार में होने वाले परिवर्तनों से है। अत: बाल-विकास के अध्ययन के अंतर्गत यह समझने का प्रयास किया जाता है कि समय के साथ-साथ बच्चों के व्यवहार में होने वाले ये परिवर्तन क्यों और किस प्रकार होते हैं। **वस्तुत:** आम बोलचाल की भाषा में इन परिवर्तनों को विकास तथा संवृद्धि की संज्ञा दी जाती है। परन्तु ये दोनों संकल्पनाएँ एक-दूसरे से काफी भिन्न हैं। संवृद्धि का अर्थ मनुष्य के शरीर के अंगों में होने वाले परिवर्तनों से है, जिसमें उसके कद, वजन आदि में परिवर्तन होते हैं। ये परिवर्तन परिमाणात्मक होते हैं।

इसके विपरीत विकास का अभिप्राय प्रकार्यात्मक तथा अंगेतर परिवर्तनों से होता है। ये परिवर्तन प्राय: गुणात्मक होते हैं। उदाहरणस्वरूप, बुद्धि का विकास।

विकास एवं संवृद्धि के बीच दूसरा अन्तर यह है कि विकास एक जीवनपर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है, जबकि आंगिक विकास एक निश्चित समयावधि के पश्चात परिपक्व हो जाता है एवं उसमें वृद्धि की संभावनाएँ लुप्त हो जाती हैं।

संवृद्धि एवं विकास के बीच एक अन्तर यह भी है कि संवृद्धि हमेशा एक व्यवस्थित एवं सकारात्मक परिवर्तन की जनक होती है। इसके विपरीत विकास की दशा में यद्यपि सामान्यतया सुव्यवस्थित और सकारात्मक परिवर्तन ही होता है, परन्तु किसी विशेष परिस्थिति में यह परिवर्तन पतन की ओर भी उन्मुख कर सकता है।

विकास और परिवर्तन

यद्यपि सभी प्रकार का विकास किसी-न-किसी प्रकार के परिवर्तन को जन्म देता है, परन्तु इसका अर्थ यह बिल्कुल नहीं है कि इसकी विपरीत स्थिति भी सही हो। बाल-विकास के आगामी चरण और प्रतिमान मात्र एक-दूसरे के बाद ही घटित नहीं होते, अपितु अपने पूर्ववर्ती चरण से सीधे विकसित होते हैं।

बाल-विकास एक वैयक्तिक प्रक्रिया

एक बात जो सामान्यत: बच्चों के विकास के दौरान पाई जाती है वह है उनके विकास की गति में अन्तर। **सामान्यत:** यह देखा जाता है कि एक बच्चा काफी कम अवस्था में ही बोलना-चलना शुरू कर देता है, परन्तु दूसरा बच्चा यही गुण अपेक्षाकृत देर से सीखता है। परन्तु विकास की गति में यह अन्तर आगे चलकर नगण्य हो जाता है एवं दोनों बच्चों का विकास एक समान हो जाता है। इसका अर्थ यह है कि प्रत्येक बच्चा अपने आप में अद्वितीय होता है। अत: उसमें विकास की प्रक्रिया भी भिन्न होती है। शरीर के विभिन्न अंगों की वृद्धि की दर भी अलग-अलग होती है। प्रत्येक व्यक्ति अपने ढंग से विकसित होता है तथा बालकों और बालिकाओं के विकास की दर में अन्तर होता है।

बाल-विकास के सिद्धांत

मानव विकास की बुनियादी प्रक्रिया में निम्नलिखित की भूमिका अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है–

(क) संवृद्धि की प्रक्रियाएँ तथा स्तर।

(ख) पूरे जीवन काल में संवृद्धि और व्यवहार के नियम।

(क) संवृद्धि प्रक्रिया–बाल-विकास में तीन अन्तर्सबधिंत प्रक्रियाएँ निहित हैं, वे हैं–विभेदीकरण, समाकलन और अधिगम। कालान्तर में युग्मनज स्वयं को विभिन्न कोशिकाओं के रूप में कई गुणा बढ़ा लेता है, जो एक सुभिन्न अभिलक्षण ग्रहण कर लेती है। ये सर्वप्रथम अंतश्चर्मी (एण्डोडर्मिक), मध्य जनश्चर्मी (मेसोडर्मिक) और बाह्यचर्मी (एक्टोडर्मिक) परतों में दिखती हैं। मानव शरीर के विभिन्न अंगों का विकास उपर्युक्त प्रकार के ऊतकों की परत के भीतर होता है। ये सब मिलकर अन्तत: विभिन्न तंत्रों का निर्माण करते हैं, यथा–केंद्रीय स्नायु तंत्र, परिसंचरण तंत्र, ग्रंथि तंत्र, पाचन तंत्र, मलमूत्र उत्सर्जन तंत्र आदि।

1. **संवृद्धि–प्रारूप एक जैविक अनुक्रमण का पालन करता है**–मानव शरीर का क्रियात्मक विकास अपने को संरचनात्मक परिवर्तन की सार्वभौमिक और सुव्यवस्थित प्रक्रिया में व्यक्त करता है। इसमें शिरोपुच्छीय (सेफ्लोकोडल) तथा निकट दूरस्थ (प्रोक्सीमाडिस्टल) के रूप में अनुक्रमण के दो विशिष्ट प्रकार दिखाई देते हैं। शिरोपुच्छीय (सेफ्लोकोडल) अनुक्रमण के अंतर्गत जैसा कि नाम से स्पष्ट है, विभेदीकरण और संरचनात्मक परिपक्वता सिर से आरम्भ होकर धड़ से होते हुए शरीर के अंतिम अंग की ओर बढ़ती है। इसका अर्थ है–शरीर के अन्य अंगों की तुलना में मस्तिष्क और सिर में विकास तेजी से होता है एवं इसमें परिपक्वता भी अन्य अंगों की तुलना में पहले ही आ जाती है। निकट-दूरस्थ (प्रोक्सीमोडिस्टल) अनुक्रमण शिरोपुच्छीय अनुकरण का प्रबंधन मात्र करता है।
2. **सभी व्यक्ति एक-दूसरे से भिन्न होते हैं**-आमतौर पर कुछ व्यक्ति, विशेषकर युगल बच्चे एक समान प्रतीत होते हैं–परन्तु ध्यानपूर्वक देखने से यह स्पष्ट हो जाता है कि कोई भी दो व्यक्ति प्रेक्षणीय पहलुओं में एक समान नहीं हो सकते। संभव है कि किन्हीं दो व्यक्तियों के बाह्य पक्ष और व्यवहारगत विशेषक एक जैसे हों, परन्तु फिर भी प्रत्येक व्यक्ति अपने विशिष्ट तरीके से परिवर्तित होता रहता है।
3. **जीवों के तंत्रें एवं प्रकार्यों की वृद्धि में अंतर होता है**–मनुष्य के सभी अंगों के संरचनात्मक और क्रियात्मक विकास की दरें व्यक्तिमूलक आवृत्यात्मक एवं असमान होती हैं। अभिभावक और शिक्षकों को यदि यह भली-भाँति स्पष्ट हो कि किसी विशिष्ट व्यवहार के लिए किन

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

योग्यताओं और कौशलों की आवश्यकता है, तो इस नियम के अधिगम और निष्पादन के निहितार्थ स्पष्ट हो सकते हैं।

4. **प्रस्फुटित योग्यताओं और कौशलों की स्वत: अभिव्यक्ति**– प्रत्येक शिशु, बच्चे, किशोर और प्रौढ़ में बढ़ने और परिपक्व होने, नई योग्यताओं को ग्रहण करने एवं उसका सतत् अभ्यास कर उसे निखारने की प्रबल इच्छा होती है। जिज्ञासा और खोज करने, नए अनुभव प्राप्त करने और योग्यताओं और कौशलों के अनुप्रयोग में प्रगति की इच्छा जीवन में बड़ी उम्र तक चलती रहती है और वृद्धावस्था में भी पूरी तरह समाप्त नहीं होती।
5. **विकास के प्रत्येक चरण के अपने विशेषण एवं अभिलक्षण**–खेल सामग्री और स्थिति की लगभग समानता के बावजूद खेल के प्रति किसी शिशु और चार वर्ष के बच्चे की गतिविधियों में पर्याप्त अंतर होता है। विकास के प्रत्येक चरण के दौरान कुछ विशिष्ट विशेषक अथवा समायोजनों को प्राय: समस्या प्रधान व्यवहार की संज्ञा दी जाती है। वास्तव में समस्या प्रधान व्यवहार न होकर विकास अवस्था के चरण विशेष के विशिष्ट व्यवहार हैं।
6. **विकास में निरंतरता**–किसी भी नई योग्यता को हासिल करने के लिए दो अवस्थाओं से होकर गुजरना पड़ता है। पहली अवस्था होती है–तैयारी की अवस्था और दूसरी अभिव्यक्ति की अवस्था जिसमें व्यक्ति/बच्चे द्वारा बुनियादी सिद्धांतों की जानकारी ग्रहण की जाती है, जिसके आधार पर संबंधित आगामी विकास संभव होता है।
7. **व्यक्ति का विकास एक एकीकृत समग्र के रूप में**–यद्यपि विभिन्न व्यक्तियों में जैविक, बौद्धिक और मनोवैज्ञानिक विकास तथा समाकलन का स्तर अलग-अलग हो सकता है, फिर भी ऐसा कोई भी व्यक्ति नहीं होता जिसके विकास के किसी भी चरण में शारीरिक क्रियाओं, मानसिक योग्यताओं तथा व्यक्तित्व संगठन के एकीकरण में कमी हो। यदि संतुलन की कमी है तो भी मानव विकास में एक प्रकार की समग्रता अवश्य ही मौजूद रहती है।

बाल-विकास की अवस्थाएँ

बच्चों के विकास के विभिन्न चरण होते हैं, जो अन्य चरणों के साथ एक व्यापक सहसंबंध होने के बावजूद अपनी अनन्य विशिष्ट आवश्यकताओं और अपेक्षाओं से पूर्ण होते हैं। विकास के ये चरण निम्नलिखित होते हैं-

1. प्रसव पूर्व अवस्था
2. नवजात काल
3. शैशव काल
4. प्रारंभिक बाल्यकाल (प्राग्विद्यालयी वर्ष)
5. मध्य बाल्यकाल (विद्यालयी वर्ष)
6. किशोरावस्था

1. **प्रसव पूर्व अवस्था**–युग्मनज (निषेचित अंडे) के निर्माण से जीवन आरम्भ होता है। गर्भधारण के पश्चात पहले एक-दो घंटे के भीतर ही निषेचित अण्डा दो कोशिकाओं में विभाजित हो जाता है। दस घंटे के पश्चात ये कोशिकाएँ चार कोशिकाओं में विभाजित हो जाती हैं। इसके बाद प्रत्येक दस घंटे में ये चार से आठ, आठ से सोलह आदि भागों में विभाजित होकर इन कोशिकाओं की संख्या में वृद्धि करती जाती हैं। इस प्रकार कोशिकाओं के विभाजन की प्रक्रिया गर्भाधारण के बाद आठ सप्ताह तक चलती रहती है। यह अवस्था भ्रूणावस्था कहलाती है, जिसमें भ्रूण की पहचान मानव जीवन के रूप में हो जाती है।
   युग्मनज निर्माण पिता के शुक्राणु का माता के अंडे के साथ संलयन के फलस्वरूप होता है। यह एक जटिल प्रक्रिया है। पिता का शुक्राणु और माता का अंडा अन्य बातों के अलावा जीन्स के रूप में आनुवांशिक अभिलक्षणों का वहन करते हैं।
2. **नवजात काल**–यह अवस्था लगभग दो सप्ताह की होती है, जिसमें बच्चा शारीरिक तौर पर अपने आपको नए परिवेश में ढालता है। **सामान्यत:** इस समय एक नवजात शिशु का औसत वजन लगभग 7 पौंड तथा औसत ऊँचाई लगभग 20-22 इंच होती है।
3. **शैशव काल**–नवजात काल से 2 वर्ष तक की आयु तक शैशव काल कहलाता है। इस काल में बच्चे का विकास अत्यंत ही तीव्र गति से होता है। इस अवधि में गतिक विकास अर्थात मांसपेशियों का संचालन अत्यधिक होता है। इस समय में बच्चा स्वेच्छा से हिलने-डुलने की क्षमता विकसित कर लेता है।
4. **प्रारंभिक बाल्यकाल (प्राग्विद्यालयी वर्ष)**–जीवन के तीसरे वर्ष से आरंभ होकर 5-6 वर्ष की आयु प्रारंभिक बाल्यकाल की अवधि कहलाती है। इस चरण को प्राग्विद्यालयी चरण भी कहते हैं। इस आयु वर्ग में बच्चे में असीम कल्पनाशक्ति की संभावनाएँ होती हैं। शैशव काल की तुलना में इस काल में वृद्धि की दर अपेक्षकृत धीमी, परन्तु स्थिर होती है।
5. **मध्य बाल्यकाल (विद्यालयी वर्ष)**–जीवन के छठे वर्ष से लेकर बारह वर्ष तक की आयु मध्य बाल्यकाल अथवा विद्यालयी वर्ष कहलाती है। इस अवस्था में वृद्धि की दर धीमी, किन्तु स्थिर रहती है। इस अवस्था में उसकी ऊँचाई में वृद्धि का एक मुख्य कारण बच्चे की टाँगों की लम्बाई बढ़ना होता है। इस अवस्था में बच्चे चलने, दौड़ने, फेंकने आदि जैसे गत्यात्मक कौशलों में दक्षता हासिल कर लेते हैं। बच्चों में चिन्तन की योग्यता का विस्तार होने के कारण जानकारी का भंडार भी बढ़ता है।
6. **किशोरावस्था**–बाल्यावस्था और प्रौढ़ावस्था के बीच के

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

संक्रमण काल को किशोरावस्था कहा जाता है। इस अवस्था में बच्चे की लम्बाई पूरी हो जाती है, आंतरिक अंग और तंत्र प्रौढ़ व्यक्ति के आकार के हो जाते हैं और बच्चे में लैंगिक रूप से भी परिपक्वता आ जाती है।

बाल–विकास के पक्ष

मानव जीवन में होने वाले विकास के पक्ष निम्नलिखित हैं–

1. **शारीरिक एवं गतिक विकास**–गर्भाधान के समय से लेकर ही बच्चे के शरीर के आकार एवं संरचना में आनुपातिक परिवर्तन आते हैं, जिसे आम तौर पर शारीरिक विकास की श्रेणी में रखा जाता है।

इस अवस्था में बच्चा अपने शारीरिक विकास के साथ-साथ अपने परिवेश को अपनी आवश्यकतानुसार प्रयोग करना भी सीखता है। इसी समय बच्चा गतिक विकास अर्थात शरीर के संचलन को नियंत्रित करने की योग्यता भी सीखता है।

गतिक विकास दो प्रकार का होता है–

(1) स्थूल गतिक विकास। इसके अंर्तगत बड़े आकार की मांसपेशियों से संबधित कौशल जैसे दौड़ना, उछलना, कूदना, साइकिल चलाना आदि सम्मिलित हैं।

(2) अंगुलियों, कमर और हाथ एवं आँखों के समन्वय का विकास। पेशीय कौशलों का विकास, इनका परिपक्व होना और अधिगम-अक्सर इन्हीं दोनों के द्वारा निर्धारित होते हैं।

2. **संज्ञानात्मक विकास**–संज्ञानात्मक विकास बच्चे की मानसिक क्षमता में विकास और परिवर्तन से जुड़ा है। ये परिवर्तन शैशव काल में आरंभ होते हैं और किशोरावस्था में आते-आते परिपक्वता को प्राप्त कर लेते हैं। इस विकास के अंर्तगत अनेक योग्यताएं सम्मिलित होती हैं, यथा–अवधान, प्रत्यक्षण, स्मृति, चिन्तन, समस्या समाधान तथा वृद्धि।
3. **भाषिक विकास**–भाषिक विकास का अभिप्राय उस माध्यम से है, जिसके द्वारा बच्चा अपनी मनोभावनाओं को अपने इच्छित व्यक्ति तक आसानी से पहुँचा सकता है। पठन एवं लेखन कौशलों का विकास इसी के अंतर्गत शामिल है।
4. **समाजिक विकास**–बच्चे के सामाजिक विकास का अर्थ, उसके द्वारा अपने परिवेश में उपस्थित व्यक्तियों से उपयुक्त संबंध स्थापित करने की योग्यता होती है।
5. **संवेगात्मक विकास**–संवेगात्मक विकास का अर्थ है–एक चरण से दूसरे चरण की ओर अग्रसर होने की स्थिति। बाहरी रूप से तो यह भाषा अथवा शब्दावली के द्वारा व्यक्त होती है, परन्तु इस अभिव्यक्ति के पीछे आंतरिक रूप से तीन प्रकार के अनुभव निहित होते हैं, जो कभी स्पष्ट होते हैं, तो कभी पूरी तरह स्पष्ट नहीं होते हैं।
6. **अभिप्रेरणात्मक विकास**–अभिप्रेरणा का अर्थ प्रेरित करने से है। उदाहरण के तौर पर यदि बच्चा रोता है, तो संभव है कि इसके लिए अभिप्रेरक का कार्य उसकी भूख, प्यास अथवा अन्य किसी आवश्यकता ने किया हो।

वस्तुतः आवश्यकताएँ विभिन्न प्रकार की होती हैं, जिनको मुख्य रूप से दो भागों में बाँटा जा सकता है–

(क) शरीर क्रियात्मक आवश्यकता, तथा

(ख) अन्य स्तरीय आवश्यकताएँ।

पहली आवश्यकता के अंर्तगत भोजन, पानी, वस्त्र, घर आदि की आवश्यकताएँ आती हैं। स्तरीय आवश्यकताएँ मुख्य रूप से प्रकृति में मनोवैज्ञानिक होती हैं। इनमें प्यार, उद्दीपन, उपलब्धि, संबद्धता शक्ति आदि की आवश्यकताएँ सम्मिलित हैं।

7. **समाकलित व्यक्तित्व का विकास**–उपर्युक्त वर्णित विकास के पहलू एक-दूसरे से अलग न होकर अंतर्संबंधित एवं कुछ हद तक अन्योन्याश्रित होते हैं।

बोध प्रश्न

प्रश्न 1. विकास की संकल्पना की व्याख्या कीजिए।

उत्तर–बाल-विकास का तात्पर्य समय के साथ-साथ बच्चों के व्यवहार में होने वाले परिवर्तनों से है। बाल-विकास के अध्ययन में यह समझने का प्रयास किया जाता है कि समय के साथ-साथ बच्चों के व्यवहार में होने वाले ये परिवर्तन क्यों और किस प्रकार होते हैं। साधारण रूप में इन परिवर्तनों को विकास तथा संवद्धि की संज्ञा दी जाती है, परन्तु ये दोनों संकल्पनाएँ एक-दूसरे से पर्याप्त भिन्न हैं।

विकास का तात्पर्य व्यावहारिक अथवा अजैविक परिवर्तन से है। इसकी प्रकृति प्रायः गुणात्मक होती है तथा यह एक जीवनपर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है, जो सुव्यवस्थित और सकारात्मक परिवर्तनों को निर्दिष्ट करती है। यहाँ पर ध्यान देने योग्य बात यह है कि ऐसे कुछ परिवर्तन पतन की दिशा में भी हो सकते हैं।

प्रश्न 2. संवृद्धि और विकास का वर्णन कीजिए।

उत्तर–संवृद्धि का अर्थ मनुष्य के शरीर के अंगों में होने वाले परिवर्तनों से है, जिसमें उसके कद, वजन आदि में परिवर्तन होते हैं। ये परिवर्तन परिमाणात्मक होते हैं (अर्थात किसी व्यक्ति की ऊँचाई छह फुट एवं वजन साठ किलो है। ऊँचाई और वजन को मापा जा सकता है।)

दूसरी ओर विकास का अभिप्राय प्रकार्यात्मक तथा अंगेतर परिवर्तनों से होता है। ये परिवर्तन प्रायः गुणात्मक होते हैं। उदाहरणस्वरूप, बुद्धि का विकास।

विकास जीवनपर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है, जबकि आंगिक विकास एक निश्चित समयावधि के पश्चात परिपक्व हो जाता है एवं उसमें वृद्धि की संभावनाएँ लुप्त हो जाती हैं। उदाहरणस्वरूप मनुष्य की आंगिक वृद्धि सामान्यतः 12 वर्ष, 16 वर्ष तथा 18 वर्ष के बीच सर्वाधिक होती हैं, परन्तु इसके पश्चात विशेष रूप से 25 वर्ष की आयु के पश्चात संवृद्धि बिल्कुल नहीं होती है। दूसरी तरफ आयु में वृद्धि के साथ व्यक्ति सामान्यतः अधिक सक्षम, सामाजिक रूप से परिपक्व एवं संवेगात्मक रूप से स्थिर हो जाता है।

www.neerajbooks.com